International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 02 February- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

धूमिल के काव्य में ग्रामीण जनजीवन की अभिव्यक्ति

डॉ. सुमन लता,
एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी)
डी.ए.वी. कॉलेज, पिहोवा।

ग्रामीण–बोध एक ऐसी संकल्पना है जिसमें ग्रामीण वातावरण, किसानी परिवेश के साथ–साथ श्रम साधना के लिए तत्पर भारतीय संस्कृति की झलक मस्तिष्क में उभरने लगती है। प्रायः नगरीय लोग गांव के लोगों को गंवार समझते हैं। ग्रामीण जन के प्रति उपेक्षा का यह भाव काफी पहले से समाज में व्याप्त था, लेकिन आधुनिक समय में यह भाव और भी गहरा हो गया। समाजवाद के कारण पनपी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने तो स्वाधीनता के बाद ही देहाती और शहरी जीवन की खाई को बढ़ा दिया है। शहरी आज भी अपने को अधिक समझदार व शिष्ट समझता है और ग्रामीण को तिरस्कृत भाव से देखता है। लोकतन्त्र के बाद भी यह फासला बढ़ता गया। शहरी व ग्रामीण सभ्यता, संस्कृति के बीच विरोधाभास का एक और कार यह भी है कि दोनों अपने–अपने समाज व संस्कृति के श्रेष्ठत्व की कल्पनाओं से चिपकते रहते हैं।

ग्रामीण–बोध की संकल्पना मात्र से ही ऐसे परिवेश का परिदृश्य मस्तिष्क में उभरने लगता है जिसमें खेत–खलिहान, फसल बोते या काटते किसान, गाय, बैल व भेड–बकरी की आवाज, फल–फूलों की खुशबू मेहनत करते पसीने से सराबोर होते स्त्री–पुरुष और चूल्हे–चौके में काम करते बच्चे सभी कुछ शामिल हैं। ग्रामीण परिवेश का चित्रण वही कर सकता है जिसने इस परिवेश को जिया हो, भीगा हो या अनुभव किया हो जैसे– ''किसी कलाकार द्वारा मनाया गया पहाड़ का चित्र और सामान्य पहाड़ चित्रकार में अन्तर होता है, क्योंकि चित्रित पहाड़ चित्रकार के अपने सौन्दर्यानुभव का परिणाम है। उसके पीछे अनुभवों की प्रेरणा है।''[प] अर्थात् ग्रामीण–बोध का वास्तविक अनुभव गांव के उस ठोस धरातल पर ही सम्भव है जिसमें परिश्रम ही जीवन का पर्याय है। ग्रामीण लोगों की अपनी संस्कृति, संस्कार, रहन–सहन संर्घषरत जीवन ही पहचान है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में हिन्दी कविता विभिन्न परिस्थितियों व प्रवृत्तियों के साथ आगे बढ़ती गई और कविता में समय के साथ–साथ आगे बढ़ती गई और कविता में समय

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 02 February- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

के साथ–साथ नये आयाम दिखाई देते रहे। स्वतन्त्रता के बाद की हिन्दी कविता में नवीनता के प्रति आग्रह तो है, लेकिन आजादी के बाद जिन आदर्शों, मूल्यों व सुविधाओं की परिकल्पना आम आदमी ने की थी वे सब कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे और जिन विषयों व विद्रूपताओं से छुटकारा पाने का हम इंतजार कर रहे थे वे सब तो यथावत हैं फर्क सिर्फ इतना है कि विदेशी शासकों की जगह देशी नेताओं व पूंजीपतियों ने ले ली। जगदीश नारायण श्रीवास्तव ने लोकतन्त्र की स्थापना को जनता के लिए न मानते हुए लिखा है– ''लोकतन्त्र जनता का नहीं, पंजीपतियों, भू–स्वामियों, नेताओं का था, इस त्रिगुट को लोकतन्त्र की अपेक्षा थी। अतः उसे लोगों पर लाद दिया गया है।''[पप]

सन् 1960 के बाद हिन्दी कविता ने एक नया मोड़ लिया। इसने समाज का लेखा–जोखा प्रस्तुत कर समकालीन राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक विसंगतियों तथा विद्रूपताओं का बेबाक चित्रण प्रस्तुत करती हैं। समकालीन कविता की संरचना के लिए, रचनाकारों ने आम आदमी के प्रश्नों, सम्बन्धों व अनुभवों की रचना का विषय बनाया। समकालीन कविता ने अपनी पूर्ववर्ती विचारधारा व कलेवर को पीछे छोड़कर नवोनता के प्रति आग्रह लेकर जन सामान्य को उभारने का प्रयास किया। सन् साठ के बाद के प्रबुद्ध कवियों ने उपेक्षा व अन्याय का खुलासा किया। समकालीन कविता का केन्द्रीय विषय आम आदमी है। धूमिल की कविता 'मोचीराम', रघुवीर सहाय की 'रामगुलाम' और रामसरन, कुमार विकल की 'तरक्की राम', ज्ञानेन्द्रपति की 'रामेसर' आदि काव्यनायक सामान्य लोग या आम आदमी ही हैं। समकालीन कविताओं में धूमिल, जगूडी, ज्ञानेन्द्रपति, विकाल, मंगलेश, राजेश आदि ने शोषण चक्र में पिसते, जिम्मेवारियों के बोझढोते, सामाजिक औपचारिकताओं को निभाते और पेटपूर्ति की तलाश में टूटते, खपते हुए आम आदमी के दुःख–दर्द, पीड़ा और छटपटाहट को संस्पर्श किया है।

धूमिल के काव्य में ग्रामीण बोध – सामाजिक संदर्भ सुदामा पाण्डेय धूमिल समकालीन कविता के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। धूमिल एक ऐसी प्रतिभा है जिसने समकालीन हिन्दी साहित्य को नई पहचान दी। ''सनिल की कविता का आरम्भ वास्तव में उस बिन्दु से होता है जब युवा लेखकों के बीच प्रखर सामाजिक चेतना व प्रतिबद्धता के कवि युक्तिबोध की कविता व व्यक्तित्व

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 02 February- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की लोकप्रियता बढ़ने लगती है। धूमिल कविताओं द्वारा सीधे सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप करता है।''[पपप]

धूमिल ने समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण किया है, लेकिन विशेष तौर पर कवि की मध्यवर्गीय व निम्नवर्गीय परिवार की कठिनाइयों व समस्याओं का चित्रण करना अच्छा लगता है। धूमिल मानव जीवन का यथार्थपरक चित्रण करते हैं और कहते हैं कि व्यक्ति को दूसरों के साथ सामंजस्य रखना चाहिए–

उसे जिन्दगी और जिन्दगी के बीच कम से कम
फासला रखते हुए जीना था
यही वजह थी कि वह
एक ही निगह में हीरा आदमी था और दूसरों
निगाह में कमीना आदमी था।''[पअ]

कवि को ज्ञात है कि ग्रामीण परिवेश में दाल–रोटी की क्या अहमियत है। कवि ने रोटी का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है जिसमें घर के भीतर का पूरा दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

कुरछुल
बटलोही से बतियाती है और चिमटा
तवे से मचलता है
चूल्हा कुछ नहीं बोलता
चुपचाप जलता है और जलता रहता है

धूमिल की कविताओं में सामाजिक परिवेश के भिन्न–भिन्न सन्दर्भ और ग्रामीण–बोध के विविध आयाम मिलते हैं।

आर्थिक सन्दर्भ – समकालीन हिन्दी कविता के कवियों ने आर्थिक वर्गीकरण को सामने लाने का प्रयास किया है। आज के समाज में आर्थिक मापदण्डों एवं धन–दौलत व रुपये पैसों की कसौटी पर वर्ग विभाजन सामाजिक अर्थव्यवस्था है। समकालीन समाज में मध्यवर्गी परिवारों में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 02 February- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। ''स्वतन्त्रता के बाद आर्थिक संकट का जो दौर आया उसमें अधिकांश मध्यवित्त परिवार उलझकर रह गए थे।''[अ]

धूमिल निम्न वर्ग की दयनीय आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है कि एक मध्यवर्गीय परिवार में एक छोटी–सी खुशी की खातिर वर्ष भर शोषण और आधा भोजन ही मिलता है–

''कुल रोटी तीन
खाने से पहले मुंह दुब्बर
पेट भर पानी पीता है
और लजाता है
कुल रोटी तीन
पहले उसे थाली खानी
फिर वह रोटी खोता।''[अप]

धूमिल कहते हैं कि निम्नवर्गीय किसान का इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि सारा दिन कड़ा परिश्रम करने के बाद भी पेट भर खान न मिले।

राजनीतिक सन्दर्भ – धूमिल मूलतः ग्रामीण संस्कारों के कवि हैं। उन्हें परम्परागत राजनीतिक अन्तर्विरोधी की समझ है और रसी कारण वे जन सामान्य को राजनीतिक षड्यन्त्रों से कवि बार–बार आगाह करता है। ''राजनीतिक अन्तर्विरोध आज इतने अधिक प्रसारित हैं, जिनको सार्थकता से समझना वर्तमान युग की एक महत्त्वपूर्ण तलाश है।''[अपप] धूमिल की राजनीतिक समझ और बौद्धिकता उन्हें अपने परिवेश के और अधिक नजदीक लाती है। स्वतन्त्रता के बाद आम ग्रामीण ने जिस सुशासन की परिकल्पना की थी वह स्वप्न बनकर रह गई। वर्ग–वैषम्य, शोषण, दमन–चक्र आदि कुचक्र पूर्ववत रह गए और पूंजीपतियों व राजनीतिज्ञों ने गरीबों व असहाय लोगों पर अपना शिकंजा और तेज कर दिया। गांधीवाद व राम राज्य की कल्पना मात्र घोषणा तक ही सीमित रह गई, जैसे–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 02 February- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

''अपने दिमाग के आत्मघाती एकान्त में
खुद को निहत्था साबित करने के लिए
मैंने गांधी के बीनों बन्दरों की हत्या कर दी है।''[अपपप]

अर्थात् आज के बदलते परिवेश में गांधी के अहिंसावाद की सार्थकता अर्थहीन हो गई है क्योंकि आज वह बुरा देख रहा है, सुन रहा है, कह रहा है। गांधीवादी नीतियां अप्रासंगिक हो गई हैं। धूमिल ग्रामीण परिवेश के कवि होने के कारण साधारण जनता से बेहद लगाव रखते हैं। इसी कारण उनकी कविता में ग्रामीण बोध के विविध राजनीतिक सन्दर्भ परिलक्षित होते हैं।

सांस्कृतिक सन्दर्भ – भारतवर्ष समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा को लेकर विश्व–विख्यात है, लेकिन स्वातन्त्र्योत्तर काल में हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को पूर्णतया सुरक्षित नहीं रख पाये इसका कारण है कि नैतिक मूल्यों का पतन व मानव मूल्यों की अस्थिरता और मानव की स्वार्थपरक दृष्टि। ''समाज में बढ़ती अर्थ की महत्ता के कारण मानवीय मूल्यों में परिवर्तन हुआ है। समाज में सत्य, अहिंसा, परोपकार, ईमानदारी, मित्रता, दया, करुणा, सहयोग जैसे नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति समान और आदर का भाव लुप्त हो गया।''[पग] धूमिल समकालीन कविता के उन महत्त्वपूर्ण कवियों में से है जिन्होंने अपने देश, अपनी मिट्टी व अपनी संस्कृति को अपनी कविता में स्थान दिया। धूमिल की कविता समसामयिक समाज को सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ व्याख्यायित करती है, जैसे–

''कल भूखे गर्भाशय की ओट से
एक युद्ध, अपराधी की
घोषणा होगी
ओ माँ! ओ बहन!
ढिल्लो में पानी भर लो
रोटियां कठौती मे बहा दो
और उन्हें पत्थर के चौके से ढँक दो।''[ग]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 02 February- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कवि ने कहा है कि भले ही समय कितना भी कठिन था विपरीत हो संस्कार या रिश्ते ही बुरे वक्त में काम आते हैं।

भाषिक सन्दर्भ – समकालीन हिन्दी कविता ने भाषा के पुराने नियमों को तोड़कर सीधा जन सामान्य से जोड़ने का प्रयास किया। धूमिल की भाषा सरल और सटीक भाषा है और रौली बेजोड़ है। धूमिल की भाषा समसामयिक विषमताओं को उजागर करने में सक्षम है। धूमिल का मत है कि ऐसा मानना गलत है भाषा पर किसी जाति अथवा समुदाय का हाथ है जबकि भाषा की चुप्पी और चींख दोनों अलग–अलग फर्ज अदा करती हैं। धूमिल से 'भाषा की रात' शीर्षक कविता में भाषा पर विस्तार से चर्चा की है। कवि कहते हैं कि लोग स्वार्थी हो गए हैं। अपने ढंग से भाषा को बदलते हैं, जैसे–

''उसके लिए केवल तमाशा है
बिना किसी क्षोभ के
उसने अपने तख्तियों के अक्षर बदल
दिये हैं
क्योंकि कवियों की भाषा तो सहमति की
भाषा है
देश डूबता है तो डूबे
लोग ऊबते है तो ऊबें
जनता लट्टू हो।''[गप]

उपरोक्त आधार पर धूमिल ने अपनी कविताओं में जन सामान्य की भाषा का प्रयोग किया है। धूमिल ग्रामीण संस्कारों का कवि हैं और यही कारण है कि उनकी कविता में ग्रामीण बोध के विविध आयाम परिलक्षित होते हैं जिनमें ग्रामीण बोध के सामाजिक, आर्थिक, राजनीकि, सांस्कृतिक व भाषिक संदर्भ विद्यमान है।

• • • • •

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 02 February- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सन्दर्भ –

प ओम अवस्थी, रचना प्रक्रिया, पृ. 149
पप जगदीश नारायण श्रीवास्तव, समकालीन कविता पर बहस, पृ. 37
पपप कुमार कृष्ण, दूसरे प्रजातन्त्र की तलाश में धूमिल, पृ. 69
पअ धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ. 10
अ महावीर वत्स, साठोत्तरी कविता में सांस्कृतिक चेतना, पृ. 48
अप धूमिल, कल सुनना मुझे, पृ. 17
अपप राकेश कुमार, धूमिल की काव्य–चेतना : विविध आयाम, पृ. 86
अपपप धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ. 17
पग महावीर वत्स, साठोत्तरी कविता में सांस्कृतिक चेतना, पृ. 30
ग धूमिल, सुदामा पांडे का प्रजातन्त्र, पृ. 38
गप धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ. 95